वाल्मीकि व्याघ्र आरक्ष, प्रमण्डल–01, बेतिया, प0 चम्पारण, बिहार।

–मंगुराहां टूरिज्म सेंटर एक परिचय–

सोफा मंदिर (मंगुराहां प्रक्षेत्र)

यह मंदिर मंगुराहा प्रक्षेत्र से 03 किलोमिटर की दूरी पर स्थित है। स्थानीय लोगों के अनुसार इसको राजा हेतु कुँअर गढ़ के नाम से भी जाना जाता है। छठी शताब्दी में निर्मित यह एक पौराणिक धार्मिक स्थल है, जो पंडई नदी के तट पर अवस्थित भगवान शिव का मंदिर है। यहां पर श्रावण मास में थारू समाज द्वारा एक भव्य मेला का आयोजन भी किया जाता है।

लालभितिया व्यू प्वाइंट

मंगुराहा रेंज से करीब 08 किलोमिटर की दूर पर एक सौदर्य रमणीक स्थल जो प्रकृति की गोद में अवस्थित है। जहॉ से पर्यटक उचें–उचे पहाड़ो के साथ–साथ शिवालिक रेंज के सौमेश्वर पहाड़ का मनोरम दृश्य का आनंद उठा सकते है।

सुभद्रा मंदिर

सुभद्रा मंदिर मंगुराहा रेंज से 10 कि0मी की दूरी पर अवस्थित एक पौराणिक धार्मिक स्थल है। स्थानीय लोगो की मान्यता है कि महाराज पाण्डु के पुत्र अर्जून की पत्नी सुभद्रा ने अपना देह यही पर त्याग किया था। यह एक देवी मंदिर है, यहां पर चैत्र नवरात्री में भव्य मेला लगता है। स्थानीय थारू संस्कृति की पूजा एवं महिलाओं द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। इस मेले में उ□त्तर बिहार के विभिन्न जिलों के अतिरिक्त सीमावर्ती नेपाल देश से भी काफी संख्या में श्रद्वालु–भक्त आते है।

जार्ज पंचम गेस्ट हाउस

मंगुराहा प्रक्षेत्र से 11 कि0मी0 की दूरी पर अवस्थित ठोरी परिसर अन्तर्गतः–

जार्च पंचम ब्रिटिश शासक थें, जिन्हे सन् 1911 में नेपाल के राजा एवं बेतिया महाराज के द्वारा आमंत्रित किया गया था। इनके आगमन हेतु सन् 1904 में नरकटियागंज से ठोरी तक रेलमार्ग का निर्माण भी कराया गया और इसी बीच इनके ठहरने के लिए भारत–नेपाल सीमा पर भारत के ठोरी में गेस्ट हाउस का निर्माण कराया गया जो आज ऐतिहासिक स्थल के रूप में जाना जाता है।

मंगुराहा ग्रासलैण्ड

प्रक्षेत्र में ग्रासलैण्ड का निर्माण किया गया हैं, जहां शाकाहारी वन्यजीव अपने भोजन के लिए काफी संख्या में विचरण करते है। यह वन्यजीवों का पसंदीदा चारागाह है। जंगल सफारी में जाने वाले पर्यटकों को ग्रासलैण्ड में काफी संख्या में हिरण, सांभर, गौर, चीत्तल, कोटरा, मोर, आदि शाकाहारी वन्यजीव दिखाई देते है, जिसे देखकर पर्यटक आनंदित होते है।

वॉटर होल

प्रक्षेत्रों में शाकाहारी एवं मॉसाहारी जानवरों को पीने के पानी के लिए पक्के एवं कच्चे वॉटर हॉल बनाये गये है। इन वॉटर हॉल के पास जानवर आसानी से सूखे मौसम में भी पानी पी सकते है। यदि गर्मी के दिनों में पक्के वॉटर हॉल में पानी सूख जाता है, तो टंकी से पानी को भरा जाता है।

पंडई नदी।

यह नदी नेपाल से निकलकर भारतीय सीमा के ठोरी में प्रवेश करती हैं। यह नदी मंगुराहां प्रक्षेत्र होकर नरकटियागंज अनुमंडल के सिकराहना नदी में मिलती है। मंगुराहां आने वाले पर्यटक इस नदी का मनोरम दृश्य व नदी के तट पर विचरण कर रहे प्रवासी पक्षियों का दीदार करते है।

रमपुरवां अशोक स्तम्भ (गौनाहा)

यह मंगुराहां प्रक्षेत्र से करीब 08 कि0मी0 व नरकटियागंज से 20 कि0मी0 की दुरी पर अवस्थित एक ऐतिहासिक स्थल है। यहां अशोक काल के दो स्तम्भ सन् 1876 में पाये गये है एक स्तम्भ के अपर अवस्थित बैंल की मूर्ति को राष्ट्रपति भवन में संधारित किया गया है, जबकि दूसरे स्तम्भ पर अवस्थित शेर की मूर्ति नेशनल संग्रहालय कलकत्ता में रखा गया है। दोनों स्तम्भों के शेष भाग देखने के लिए पर्यटक काफी संख्या में आते है। इसको देखने के लिए पर्यटक काफी संख्या में आते है।

गॉधी स्मारक संग्रहालय भितिहरवा।

यह भितिहरवा आश्रम बेतिया से करीब 60 कि0मी0 गौनहा प्रखंड में अवस्थित है। इसका निर्माण महात्मा गांधी और बाश कस्तुरबा गांधी के 1917 में चम्पारण आगमन के समय किया गया था। यहां उन्होनें किसानों के शोषण के खिलाफ अपने सत्याग्रह का पहला प्रयोग किया। खुद बाश ने भितिहरवा आश्रम बनाने के लिए ईंट उठाई। इसे आजादी संग्राम से संबंधित एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल के रूप में जाना जाता है। इसे देखने के लिए पर्यटक दूर–दूर से आते है।

–गोवर्धना टूरिज्म सेंटर एक परिचय–

	⇦ **परेवादह वॉटर फॉल** यह गोवर्धना प्रक्षेत्र से 05 कि0मी0 की दूरी पर स्थित नेचूरल वॉटर फॉल है, यहां पहाड़ियों से होकर बराबर पानी गिरता रहता है। इसे देखने के लिए पर्यटक काफी संख्या में पहुॅचते है।
	⇦ **सोमेश्वर (माता कालिका मंदिर)** यह मंदिर गोवर्धना प्रक्षेत्र से करीब 10 कि0मी की दूरी के बाद करीब 2200 फिट उंचे पहाड़ पर स्थित है। इस स्थान का नाम भगवान शंकर के नाम से रखा गया है। जहां चांद भी श्राप वश आकर इस स्थल पर पूजा पाठ कर सकते है। इस प्रसिद्व स्थल को साधक गुरू रसोगुरू व राजा भतृहरि से भी जोड़कर जाना जाता है। भारत–नेपाल सीमा होने के कारण यह चैत्र नवरात्री में **सीमा सुरक्षा बल** द्वारा पुरी सतर्कता के बाद श्रद्धालुओं के लिए नौ दिनों के लिए मंदिर खुलता है। इस पहाड़ से नेपाल का चितवन व माड़ी क्षेत्र दिखाई देता है।

 	परेवादह पहाड़ (सँकरी गली) परेवादह पहाड़ यह गोवर्धना प्रक्षेत्र से करीब 06 कि0मी0 पर स्थित है। इसे लोग सकरी गली भी कहते है। तथा यहां परेवा (कबूतर) पंक्षी हजारों की संख्या में अधिवास बनाये हुए हैं इसे देखने के लिए पर्यटक आते है।
 	टाईटेनिक प्वाइन्ट (हाथी गुफा) गोवर्धना प्रक्षेत्र से करीब 05 कि0मी0 पर स्थित टाईटेनिक प्वाइन्ट है, स्थानीय लोगों के अनुसार (हाथी गुफा) के नाम से भी इसे जाना जाता है। इसे देखने के लिए पर्यटक दूर–दराज से पहुँच काफी सुकुन महसूस करते है।